शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.8777 (SJIF)

भारतीय संगीत के विकास में अमीर खुसरो का योगदान

प्राप्तिः 25.05.2024
स्वीकृतः 26.06.2024

डॉ० रश्मि गुप्ता
संगीत विभागाध्यक्ष
सी०एम०पी० पी०जी० कॉलेज, प्रयागराज (उ०प्र०)
ईमेलः *drrashmiguptacmp@gmail.com*

35

सारांश

अबुल हसन यामिनुद्दीन खुसरो को अमीर खुसरो के नाम से जाना जाता है यह एक महान संगीतज्ञ, कवि एवं विद्वान थे जो दिल्ली सल्तनत के समय रहे और सात सुल्तानों के साथ दरबारी होने का दायित्व निभाया। वो एक कवि थे संगीतज्ञ भी थे जो संगीतकार, गीतकार, कलाकार एवं वाद्य–यंत्रों के निर्माता भी माने जाते हैं। कई विधाओं के परिवर्तन का श्रेय भी उनको दिया जाता है। उनका पाण्डित्य संस्कृत, हिंदी, फारसी, अरबी भाषा में बखूबी था और इस कारण उन्होंने संगीत की कई पारम्परिक विधाओं को साधारण जनमानस की रूचि के अनुसार लोकप्रिय बनाया। उन्होंने उसे समय प्रचलित भारतीय शास्त्रीय संगीत का भली–भाँति ज्ञान प्राप्त था। वे कई दरबारों में गायक रहें और मौका पाकर उन्होंने अपने जीवनकाल में कई कविता, गजल, बंदिशे, दोहे, पहेली इत्यादि की रचना कर ख्याति प्राप्त की थी। उस समय बहुत सारे इतिहासकार और लेखक थे पर सबसे प्रसिद्ध फारसी लेखकों में उनकी ही गिनती होती थी।

मुख्य बिन्दू

अमीर खुसरो, संगीत, परम्परा, साहित्य, संस्कृति

अमीर खुसरो का जन्म एवं पारिवारिक परम्परा

आपका जन्म 1252 में उत्तर प्रदेश के एटा जिले में स्थित पटियाली नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता अमीर सैफुद्दीन शमसी तुर्की जाति के थे। वह सुल्तान इल्तुतमिश के पुलिस बल में शामिल थे। उनकी माता बीवी दौलत नाज़ भारतीय थी। ये रावत अरज़ की पुत्री थी। अत्याचारी मंगोल शासक चंगेज खान ने लूटपाट मचाकर इस स्थान की बर्बादी कर दी। जिस कारण वहाँ के लोग उसे जगह से भाग निकले। वहाँ से उन्होंने सुल्तान इल्तुतमिश को अपना प्रतिनिधि भेजकर सहायता माँगी जो उसे समय दिल्ली में राज्य संभाल रहे थे। 1230 में आमिर सैफुद्दीन को पटियाली नामक रियासत अनुदान में मिली। इनके नाना जी के ही घर में खुसरो की मुलाकात सूफी संत निजामुद्दीन औलिया से हुई। खुसरो इनसे बहुत प्रेरित हुए और जीवन भर उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलते रहे।

खुसरो की साहित्यिक रचनाएँ

खुसरो अपने समय के ख्याति सम्पन्न कवि, विद्वान माने जाते थे। उनकी कृतियों में भली–भाँति इसका परिचय मिलता है। अपनी प्रत्येक साहित्यिक कृति में उन्होंने भारत के पर्यावरण, वनस्पति और पशु संस्कृति एवं ज्ञान की सराहना की है। मूलतः खुसरो ने अपने लेख फारसी में लिखी लेकिन हिन्दी में लिखी लेख लोगों के जुबान पर ज्यादा सुनाई देती है। हिन्दी जैसी देसी भाषा के विकास का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है। जो कि अरबी, संस्कृत, फारसी और कुछ देसी भाषाओं का सम्श्रिण है। हिन्दी भाषा ग्यारहवीं शताब्दी से प्रचलित हुआ। अमीर खुसरो के सूफियाना हिन्दवी और फारसी कविताएँ आज भी जीवन्त और गतिशील परम्परा में पाई जाती हैं। उनकी कुछ रचनाएँ निम्नलिखित हैं–[2]

1) नुह सिफर
2) तुगलक नमाह
3) इजाज़ी खुसरवी
4) खमसा–ए–खुसरो इत्यादि।

अमीर खुसरो के जीवन में संगीत

आप एक कुशल कलाकार एवं संगीतज्ञ थे, जिन्होंने बहुत सी सांगीतिक विधाएँ एवं कुछ वाद्य–यन्त्रों का विकास किया। इसके अतिरिक्त अनेक गजलों की रचना फारसी और ब्रज भाषा के मिश्रण से की। खुसरो को अनेक नवीन राग जैसे– सरपदी, यमन, पूर्वी, शहाना आदि रागों का आविष्कार किया है। उन्होने झूमरा, पश्तो त्रिताल आदि की रचना भी की। गायन के क्षेत्र में इन्होंने नवीन गीत की रचनाएँ की जैसे– कौल, कसीदा नक्श, रंग–तरंग, तराना, कटवाली आदि। गजल भी इन्हीं की कृति है जो आजकल प्रचलित है। आपने बहुत सी बेहतरीन राग बन्दिशे एवं लय के विभिन स्वरूप प्रकाश में लाए। किन्नरी वीणा एवं पुष्कर वाद्य से आगे से आगे चलकर बनी सितार एवं तबला जैसे वाद्य यंत्र को भी जनता तक पहुंचने और लोकप्रिय बनाने का श्रेय उनको दिया जाता है।

अमीर खुसरो द्वारा प्रचलित संगीत की कुछ विधाएँ

(1) **कव्वाली**– फारसी अरबी तुर्की तथा भारतीय आध्यात्मिक विधाओं के समागम से खुसरो ने कव्वाली को जन्म दिया। यह सूफियों की भक्ति अभिव्यक्त करने के लिए संगीत पद्धति है जो समूह में पेश की जाती है। एक मुख्य गायक पीर पैगम्बर के गुणों को सुर से गाते हैं और उसी को समूह में गाने वाले लोग दोहराते हैं। इसको गाने के लिए स्वर लय पर बहुत निपुणता की आवष्यकता होती है। खुसरो के शागिर्द जो कव्वाली गाने में दक्ष थे, उन्हें कव्वाल कहा जाने लगा, ये सिर्फ मुसलमान धर्म के धार्मिक गीत गाते थे।[3]

(2) **तराना**– तराना और त्रिवट के सृजन का श्रेय आपको ही दिया जाता है। फारसी में तराना का अर्थ है गीत भारतीय संगीत में निर्गीत, विधा, जिसमे शुष्क अक्षर और

पाटाक्षर से यह बहुत प्रभावित हुए। इस तरह इस रचना को लोग गाने लगे और वर्तमान काल में भी यह अत्यन्त लोकप्रिय है।

(3) **त्रिवट–** यह एक विधा है जिसमें पटाक्षर या तबला, पखावज, मृदंग के बोल स्वरावली और तराना के नोम–टोम गाए जाते हैं। दोनों विधाएँ ही विषिष्ट राग में गाए जाते हैं।

सितार तथा तबले के प्रर्वतक अणीर खुसरो

इनको दो वाद्य यंत्र तबला और सितार का आविष्कारक करते हैं। इहोंने त्रितन्ती बोला को सहतार कहा। यह जाने चलकर सितार के नाम से जाना गया है। तबला पुष्कर वाद्य से प्राप्त हुआ। यह दोनों ही वाद्य आज बहुत लोकप्रिय हैं।

खुसरो का अन्तिम जीवन

आपने युवा काल में हो दिल्ली के सूफी संत मो0 औलिया को अपना गुरू माना। 1310 में वे उनके शागिर्द हुए। 72 साल की आयु में इन्होंने अंतिम सांस ली। इनकी आखिरी इच्छानुसार गुरू के पास ही उनको दफनाया गया।[4]

सन्दर्भ

1. पंत, डॉ0 शिप्रा. राग शास्त्र में पारम्परिक बंदिशों की भूमिका. नई दिल्ली।
2. सिंह, डॉ0 शिखा. संगीत शास्त्र एवं प्रदर्शन. नई दिल्ली।
3. नारायण, डॉ0 पुष्पम. भैरवी. संगीत शोध पत्रिका. दरभंगा।
4. दत्ता, डॉ0 पूनम. भारतीय संगीत–शिक्षा एवं उद्देश्य. नई दिल्ली।